Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ISSN 2454-3705

श्रुतसागर | શ્રુતસાગર
SHRUTSAGAR (MONTHLY)

December-2020, Volume : 07, Issue : 07, Annual Subscription Rs. 150/- Price Per copy Rs. 15/-

EDITOR : Hiren Kishorbhai Doshi

BOOK-POST / PRINTED MATTER

वर्तमान श्री गोडीजी जैन मंदिर, मुंबई में प्रतिष्ठित तपागच्छाधिराज श्रीविजयदेवसूरि महाराज की भारतभर में एकमात्र धातुप्रतिमा। (देखें पृ.२७)

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

For Private and Personal Use Only

कोबातीर्थ समीप कैलासनगर वाटिका मध्ये नूतन जिनालय का शिलान्यास

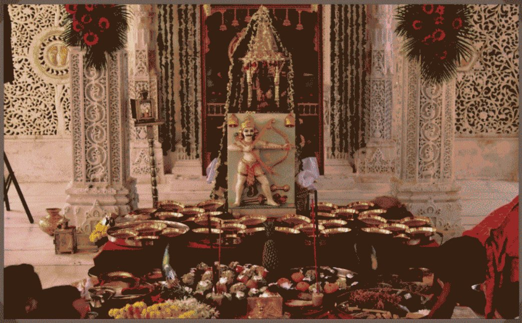

कोबातीर्थ मध्ये काली चौदस के दिन श्री घंटाकर्ण महावीर पूजन की झाँकी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

RNI : GUJMUL/2014/66126 ISSN 2454-3705

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का मुखपत्र

श्रुतसागर શ્રુતસાગર

SHRUTSAGAR (Monthly)

वर्ष-७, अंक-७, कुल अंक-७९, दिसम्बर-२०२०

Year-7, Issue-7, Total Issue-79, December-2020

वार्षिक सदस्यता शुल्क - रु. १५०/- ❖ Yearly Subscription - Rs.150/-

अंक शुल्क - रु. १५/- ❖ Price per copy Rs. 15/-

आशीर्वाद

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

❖ संपादक ❖ हिरेन किशोरभाई दोशी

❖ सह संपादक ❖ रामप्रकाश झा, राहुल आर. त्रिवेदी

❖ संपादन निर्देशक ❖ गजेन्द्रभाई शाह

एवं

ज्ञानमंदिर परिवार

१५ दिसम्बर, २०२०, वि. सं. २०७७, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष-०१

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

(जैन व प्राच्यविद्या शोध-संस्थान एवं ग्रन्थालय)

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर-३८२४२६

फोन नं. (079) 23276204, 205, 252 फैक्स : (079) 23276249, वॉट्स-एप 7575001081

Website : www.kobatirth.org **Email :** gyanmandir@kobatirth.org

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रम

१.	संपादकीय	रामप्रकाश झा	५
२.	श्रुतप्रेमी दाताओं की सूची	-	६
३.	गुरुवाणी	आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी	७
४.	Awakening	Acharya Padmasagarsuri	८
५.	विजयदेवसूरि पुण्यखजानो	गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी	९
६.	गुरुविहार गहुंली	गजेन्द्र शाह	२०
७.	धर्मकथानुयोगनी महत्ता अने श्री देवभद्रसूरिकृत कथारत्नकोष	मुनिश्री पुण्यविजयजी	२६
८.	पुस्तक समीक्षा	रामप्रकाश झा	२८
९.	समाचार सार	-	३०

❄ अंक प्रकाशन सौजन्य ❄

गुरुकृपा परिवार

जांण अजाण्यां वस पड्यो, क्या करे किर्ताल ।
चंदन पड्यो लुहार वस, बालि कर्यो अंगार ॥

प्रत क्र. १३५०४८

भावार्थ- ज्ञानी व्यक्ति यदि अज्ञानीओं के हाथ लग जाए तो ईश्वर भी क्या कर सकता है, जैसे चंदन लुहार के हाथ लग गया तो उसको जलाकर अंगार कर दिया।

❖ प्राप्तिस्थान ❖

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
तीन बंगला, टोलकनगर, होटल हेरीटेज़ की गली में
डॉ. प्रणव नाणावटी क्लीनिक के पास, पालडी
अहमदाबाद - ३८०००७, फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संपादकीय

रामप्रकाश झा

साधना और आराधनामय भव्य चातुर्मास की समाप्ति के पश्चात् श्रुतसागर का प्रस्तुत अंक आपके करकमलों में समर्पित करते हुए हमें अतीव प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। इस अंक में योगनिष्ठ आचार्य बुद्धिसागरसूरीश्वरजी की अमृतमयी वाणी व स्थायी स्तम्भों के अतिरिक्त दो अप्रकाशित कृतियों का प्रकाशन किया जा रहा है।

सर्वप्रथम **"गुरुवाणी"** शीर्षक के अन्तर्गत जैनधर्म की व्यापकता, उसका प्रचार-प्रसार तथा ज्ञान के विशाल वर्त्तुल का परिचय दिया गया है। द्वितीय लेख राष्ट्रसंत आचार्य श्रीपद्मसागरसूरीश्वरजी के प्रवचनों की पुस्तक 'Awakening' से क्रमशः संकलित किया गया है, जिसमें एक ही कथन अलग-अलग तरह से कहने से सुननेवाले के मन पड़नेवाले प्रभावों का वर्णन किया गया है।

अप्रकाशित कृति प्रकाशन के क्रम में सर्वप्रथम पूज्य गणिवर्य श्रीसुयशचन्द्र-सुजशचन्द्रविजयजी म. सा. के द्वारा सम्पादित **"विजयदेवसूरि पुण्यखजानो"** प्रकाशित किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत कर्त्ता श्रीसत्यसौभाग्य मुनि ने आचार्य श्री विजयदेवसूररि की बाल्यावस्था से आचार्यपद प्राप्ति तक के समय का वर्णन किया है। द्वितीय कृति के रूप में आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर में कार्यरत पंडितवर्य श्री गजेन्द्रभाई शाह के द्वारा सम्पादित **"गुरु विहार गहुंली"** कृति का प्रकाशन किया जा रहा है। इस कृति में गहुंली प्रकार परिचय एवं चातुर्मास के बाद साधु भगवंतो के विहार समय में कर्ता द्वारा की गई भाववाही विनति को सुंदर रूप से दर्शाया गया है। पुनःप्रकाशन श्रेणी के रूप में इस अंक में मुनि श्री पुण्यविजयजी लिखित **"कथारत्नकोश अने तेना कर्त्ता श्री देवभद्रसूरि"** के आगे का अंश प्रकाशन किया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत जनसामान्य हेतु जैन कथा साहित्य की उपयोगिता तथा उसकी महत्ता के ऊपर प्रकाश डाला गया है।

पुस्तक समीक्षा के अन्तर्गत श्री प्रेमलभाई कापडिया के द्वारा सम्पादित **"श्रीमद् देवचन्द्रकृत चौवीशी"** पुस्तक की समीक्षा प्रस्तुत की गई है। इस पुस्तक में श्री देवचन्द्रजी के द्वारा रचित चौवीशी का संस्कृत-प्राकृत अवतरणों व प्रचूरमात्रा में दुर्लभ प्राचीन चित्रों के साथ विवेचन किया गया है। आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर के लिए गौरव का विषय है कि इन में से अधिकांश प्राचीन चित्रों को संस्था के संग्रहालय में से लिया गया है। जिसके कारण इस पुस्तक का महत्त्व बढ़ गया है। मुखपृष्ठ चित्र के लिए श्री विजयदेवसूरि म.सा. का फोटो हमें श्रीगोडीजी जैन मंदिर मुंबई की ओर से साभार प्राप्त हुआ है।

हम आशा करते हैं कि इस अंक में संकलित सामग्रियों के द्वारा हमारे वाचक अवश्य लाभान्वित होंगे व अपने महत्त्वपूर्ण सुझावों से हमें अवगत कराने की कृपा करेंगे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रुतप्रेमी दाताओं की अनुमोदना

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

सकल जैनसंघ का गौरवस्थान

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

सदुपदेशक : प्राचिन श्रुत-तीर्थोद्धारक, राष्ट्रसंत

पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा

श्रुतप्रेमी दाताओं की नामावली

- श्री सीमंधर शांतिसूरी जैन ट्रस्ट, बेंग्लोर
- श्री प्रेमवर्धक जैन श्वे.मू.पू.संघ,धरणीधर, पालडी, अमदावाद
- श्री प्रह्लादनगर जैन श्वे.मू.पू.संघ, सेटेलाईट, अमदावाद
- श्री जैन श्वे.मू.पू.सुधारा खातानी पेढी, महेसाणा
- श्री सेटेलाईट श्वे.मू.पू.जैन संघ, सेटेलाईट, अमदावाद
- श्री जोधपुर सेटेलाईट श्वे.मू.पू.जैन संघ, अमदावाद
- शेठ अमीचंद पन्नालाल आदिश्वर टेम्पल चेरीटेबल ट्रस्ट, मुंबई
- श्री आंबावाडी श्वे.मू.पू.जैन संघ, आंबावाडी, अमदावाद
- श्री विमलनाथ जैन टेम्पल, कोईम्बतूर

धन्यवाद... अनुमोदना... अभिनंदन...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुवाणी

आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी

जैनदृष्टिए आत्मानुं अनन्त वर्तुल

जैनदर्शन, संग्रहनय सत्ताए **एगे आया** एवुं आत्मत्व जाति सामान्ये स्वीकारी आत्मा रूप ब्रह्मनी अस्ति विश्वमां सर्वत्र स्वीकारे छे अने तेमां सर्वनो अन्तर्भाव करे छे। सापेक्ष संग्रहनये जैनो शंकराचार्यना ब्रह्मवादनो आत्मामां अन्तर्भाव करीने जैनधर्मनी अनन्त वर्तुळतानो जगतने ख्याल करावी आपे छे। धर्मनां एकान्तवादि लघुवर्तुळो महावर्तुळमां समाय, पण जे स्याद्वाद ज्ञानरूप अनन्त वर्तुळ छे तेनो अन्य एकान्तवादात्मक लघुवर्तुळमां समाव थाय नहीं। हाथीना पगमां सर्वना पग समाय पण अन्यना पगमां हाथीना पग समाय नहीं। आ नियम प्रमाणे अन्यदर्शनो खरेखर अनेक सापेक्षनयोनी अपेक्षाए जैनदर्शनमां समाइ जाय छे। श्री आनंदघनजी कहे छे के - **षड्दर्शन जिनअंग भणीजे ॥ जिनवरमां सघळां दर्शन छे. दर्शने जिनवर भजना रे. सागरमां सघळी तटिनी सही. तटिनीमां सागर भजना रे. षड्दर्शन जिन...** जडवादीओना मतने पण जैनधर्मरूप पुरुषनी कुख समान गणीने जे दर्शन पोतानामां तेने सापेक्षपणे समावे छे ते दर्शननी अनन्तवर्तुळताने कोइ पहोंची शके तेम नथी। **अपरिमित सापेक्षज्ञानमय अनन्तवर्तुळरूप जैनदर्शन ए एक महासागर छे, तेमां अन्यदर्शनो रूप नदीओ समाइ जाय छे। अहो ! आवा स्याद्वाद जैनदर्शन स्वरूपने जैनो तरीके गणाता जैनोमांथी पण आंगळीना टेरवा पर गणाय एटला विद्वानो सम्यग् रीते उपर कथ्या प्रमाणे अने तेनो भावार्थ अन्योने संपूर्ण रीत्या अवबोधाववा समर्थ थाय छे।** जैन तरीके कहेवाता जैनो द्रव्यानुयोगी अने अध्यात्मज्ञानी गीतार्थोनी सेवा करीने जैनदर्शननी अनन्त वर्तुळता परिपूर्ण अवबोधी शके तो तेमनी विशालदृष्टि थाय अने तेओना हृदयमांथी संकुचितवृत्ति टळी जाय। तेमज तेओ सर्व दर्शनोमां व्यावहारिकोन्नति तथा धार्मिकोन्नति करवामां अग्रगण्यपद धारण करनार जैनधर्मनी अनन्त वर्तुळतानो विश्वमां बोध आपी शके। नयोनी अपेक्षाओ, विचारो अने उत्सर्ग तथा अपवादमय आचारो के जे द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, प्रमाणे साधुओने तथा गृहस्थोने आचारवाना छे तेओनो ख्याल जगतने आपवा माटे गीतार्थोए अनेक भाषामां अनेक विचारमय पुस्तको लखीने तथा भाषणो आपीने पोतानी फरज बजाववी जोइए।

क्रमशः

धार्मिक गद्य संग्रह भाग – १, पृष्ठ – ६९३

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Awakening

Acharya Padmasagarsuri

(from past issue...)

It is not proper to reveal a secret about somebody though that may be the truth, if it harms the person. We should always speak the truth no doubt, but we should speak the truth that is helpful to others and refrain from speaking the truth that harms others because it is a sin to cause harm to others. Hence, the Mahashraman Mahavir has given this sacred commandment :

"You should not speak a truth if by speaking it you are committing a sin."

In that magnificent novel, Les Miserable by Victor Hugo, there is a soul-stirring event. A holy man speaks an untruth and saves a robber from punishment with the consequence that the robber becomes a noble person, on account of the impact of the holy man's benevolence.

Our speech must be like a mantra, that is a sacred utterance. It should be brief but profoundly meaningful. On account of speaking haughtily in the intoxication of affluence even a millionaire becomes penniless, and has to go to court for recovering coppers.

If you have control over your thoughts, you can have control over your words.

Why does the "than dulfish" which is as tiny as a grain of rice, go to the seventh hell? It sits on the eyelids of a crocodile and watches how when the crocodile opens its large mouth, small fish rush out of its mouth and run hither and thither and it thinks "This crocodile is a fool. It cannot even shut its mouth properly. If I were in its position, I would not allow even a single fish to get out of my mouth when once it had come in."

(continue...)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सत्यसौभाग्य मुनि कृत

विजयदेवसूरि पुण्यखजानो

गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी

विजयहीरसूरीश्वरजी महाराज तपागच्छना पुण्यपुरूष हता। तेमनी परंपरामां विजयसेनसूरिजी, विजयदेवसूरिजी, विजयप्रभसूरिजी, विजयसिंहसूरिजी पण विजयहीरसूरिजी जेवा ज प्रभावको थया। प्रस्तुत कृति ते परंपरामांना विजयदेवसूरिजीना जीवनचरित्रनी वर्णना करती लघु रचना छे। अहीं कृतिकारे काव्यमां विजयदेवसूरिजीना जीवननी ऐतिहासिक विगतोनी साथे साथे तेमना सद्चारित्रनी विगतो पण संक्षेपमां गुंथी लीधी छे।

कृतिसार-

प्रस्तुत कृति पांच ढाळमां रचायेल ऐतिहासिक रचना छे। अहीं कृतिना प्रारंभमां 'मां' शारदानुं स्मरण करी कृति रचनानुं प्रयोजन आलेखता कविए ते पछीना पांच दूहाओमां सूरिजीना गुणवैभवनी तथा तेमना नाममंत्रनी स्मरणानुं फळालेखन करी प्रथम ढाळनो प्रारंभ कर्यो छे। देशाख रागनी आ ढाळमां कविए सौ प्रथम इडर नगरीनी वर्णना कर्या बाद अनुक्रमे त्यांना नर-नारीओनी, तेमां'य मुख्य एवा त्यांना व्यवहारी साह थिरानी तथा तेनी सुख-समृद्धिनी, तेनी पत्नि रूपानी तेमज तेणीना शीलादिगुणवैभवादिकनी वर्णना आलेखी छे। वळी कविए आ ढाळना चोथा पद्यथी ते दंपत्तिने संसारसुख भोगवता उत्पन्न थयेला पुत्ररत्नना जन्मसमय, तेना जन्मोत्सव तथा नामकरणनी महत्वनी विगतो पण लखी जणावी छे।

रासना त्यारपछीना दूहाओमां तथा बीजी ढाळमां ते बालक वासणना लक्षणोनुं तथा तेना गुणवैभवनुं वर्णन आलेखी कविए अनुक्रममां आवता दूहाओमां विजयसेनसूरिजीना अमदावाद पधारता पुत्र वासणना माता साथे सूरिजीने वांदवा गयानी तथा विजयसेनसूरिजीना ज्ञानादिक वैभवनी वातो टूंकमां रजू करी छे। ज्यारे तेनी(बीजी) ढाळमां कविए श्रीसंघने गुरुभगवंत वडे अपाती धर्मदेशनानुं तथा तेना श्रवणथी बाळक वासणना हृदयमां उत्पन्न थयेली चारित्र धर्म स्वीकारवानी अभिलाषानुं वर्णन आलेखी माता साथे संयम ग्रहण करता वासणनी ऐतिहासिक नोंध द्वारा ढाळनुं समापन कर्युं छे। खास अहीं ढाळांतमां अपायेल पूज्यश्रीनी दीक्षा संवत् ध्यानार्ह छे। कृतिना त्यारपछीना दूहाओ पण उपरोक्त विगतना अनुसंधानमां ज रचाया छे। ते

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दूहाओमां वासणना दीक्षानामनी, तेमना विद्याध्ययननी, चारित्रशुद्धिनी तथा पंडित पद अपायानी विगतो कविए गुंथी छे। विशेष नोंधमां- पंडित पद अपायानी संवत् आलेखनो शब्द "सर-सरस"(५६) प्रयोगनी दृष्टिए तथा ऐतिहासिक दृष्टिए महत्वपूर्ण छे।

हवे पछीनी ढाळ मुख्यत्वे विजयदेवसूरिजीना आचार्यपदोत्सवनी वर्णना करती ढाळ छे। जेमां कवि वडे पोतानी पाट कोने सोंपवी ते अंगे चिंतित विजयसेनसूरिजीनी, ते माटे तेमना वडे कराती विधिपूर्वकनी सूरिमंत्रनी साधनानी, तेमनी ते आराधनाथी प्रसन्न थयेला यक्षराजे आचार्यश्रीने विद्याविजयजीने पदप्रदान करवा जणाव्युं तेनी, यक्षराजना वचन अनुसार सं.१६५७ मां पं.विद्याविजयजीने खंभातमां सौ प्रथम वाचक पद तथा त्यार पछी आचार्य पद प्रदान करायानी, पद प्रदान प्रसंगे साह श्रीमल्ल सोमावडे घणु द्रव्य खरचायानी, ते पछी ते ज वर्षे पाटणमां सूरिजीनो वांदणा महोत्सव करायानी महत्त्वपूर्ण विगतो आलेखायेली छे। विशेषमां अहीं ढाळ पछीना दूहाओमां सूरिजीना प्रभावनी तथा प्रतापनी वातो पण जोवा मळे छे।

काव्यनी पांचमी ढाळ कामदेवने जीतवा माटे नीकळेला विजयदेवसूरिरूपी राजवीना युद्धवर्णननी वातो जणावती ढाळ छे। अहीं एक बाजु कामदेवरूपी राजा छे तो बीजी बाजु विजयदेवसूरिरूपी राजा छे। आ बन्ने राजवीओ कइ रीते पोतपोताना सुभटो साथे (योद्धाओ साथे), हाथी-घोडा विगेरे लावलश्कर साथे, भाला-तीरादि शस्त्र साथे युद्धमां उतर्या छे तेनुं अहीं तादृश स्वरूप आलेखायेलुं जोवा मळे छे। जेमां विजयदेवसूरिजीने पक्षे पंच आचाररूपी वीरो छे, तो यतिधर्मरूपी सुभटो। महाव्रतरूपी हाथीओ छे, तो चारित्ररूपी घोडाओ अने १८००० शीलांगरूपी रथ। शीलरूपी बख्तर छे, तो जिनाज्ञारूपी टोपो। यतिकार्यरूपी भाला छे, तो संतोषरूपी तलवार। ज्ञानरूपी धनुष छे, तो मूलगुणरूपी बाण। ज्यारे बीजी बाजु कामदेवना पक्षे मिथ्यात्वरूपी सुभट छे, तो १६ कषायरूपी सामंतो। तेने नो-कषायरूपी अंगरक्षको छे, तो कुसुमरूपी हथीयार। आश्रवरूपी योद्धा छे, तो मोहरूपी सेनापति।

आम बन्ने पक्षना सैन्यनुं स्वरूपालेखन करी ढाळना शेष पद्यो द्वारा कविए ते बन्ने पक्षना सैन्यमांथी कोणे, कोनी साथे तथा कइ रीते युद्ध कर्युं तेनी वर्णना संक्षेपमां रजू करी ते बन्ने राजवीओना परस्परना युद्धनी तथा तेमां विजयदेवसूरिवडे प्राप्त कराता विजयनी वातो गुंथवा द्वारा ढाळनुं समापन कर्युं छे। काव्यांतना ढाळ पूर्वेना दूहाओ तथा काव्यांतनी ढाळ ए बन्नेमां विजयदेवसूरिजीनी गुणस्तवना ज छे। जो के दूहामां कामदेव-विजयने अनुलक्षीने स्तवना कराइ छे, ज्यारे ढाळमां सूरिजीना सूर्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समान प्रभावने वर्णवती स्तवना कराइ छे। विशेषमां अहीं स्तवनानी साथे सूरिजीना चिरंजीवीपणानी प्रार्थना करता कविए स्वपरंपरानी आलेखना पूर्वक कृति पूर्ण करी छे।

कृतिकार

कृतिकार सत्यसौभाग्यजीए[1] काव्यांतमां नोंध्या मुजब तेओ श्रीसौभाग्यना शिष्य छे। जो के काव्यमां तेमना गच्छादिनी कोइ विशेष नोंध मळती नथी। परंतु प्रस्तुत रचना तपागच्छीय हीरविजयसूरिजीनी परंपराना आचार्यश्रीने अनुलक्षीने कराइ होय कृतिकार पोते पण ते ज परंपराना होय तेवुं अनुमान थाय छे। कृतिकार विशे अन्यत्र तपास करता तेमनी गुरुपरंपरा अनुसंधान अंक-४५ पृ.१४ मा नीचे मुजब मळे छे। (वळी ते आपणा अनुमानने पुष्ट पण करे छे)

आनंदविमलसूरिजी-विजयदानसूरिजी-विजयहीरसूरिजी-विजयसेनसूरिजी-राजसागरसूरिजी-श्रीसौभाग्य-सहजसौभाग्य। जो के अहीं पण राजसागरसूरिजी पछीनी परंपरामां कइंक खूटतुं होय तेवुं लागे छे। पण तेनो निर्णय तो कोइ पुरावो मळे त्यारे ज करी शकाय। कृतिकारनी अन्य कृतिओमां एकमात्र “श्रीबीबीपुरस्थित चिंतामणी पार्श्वनाथ प्रासाद प्रशस्ति” नामनी ऐतिहासिक रचना मळे छे। ते सिवाय तेमनी कोइ रचना अमोने मळी नथी। तेमनी कोइ अन्य कृतिओ वाचकोना ख्यालमां होय तो तेओ अमारूं ध्यान दोरे तेवी भलामण।

पुण्यखजानो साहित्य- कृतिगत विषय जोता आ नामनी रचनाओने पण पूज्योना पुण्य प्रभावनुं स्वरूप वर्णवती रचनाओ कही शकाय। उपरोक्त कृतिना नामनी जेवी ज पुण्य पर प्रकाश पाथरती आवी अन्य ३ कृतिओ नोंधायेली जोवा मळे छे। (१) विजयदानसूरि पुण्यखजानो रास, (२) विजयहीरसूरि पुण्यखजानो रास (३) विजयसेनसूरि पुण्यखजानो रास। कदाच आवी ज रचनाओ अन्य संप्रदायमां पण थइ होय तो तेनी तपास करवी घटे।

प्रान्ते संपादनार्थे प्रस्तुत कृतिनी हस्तप्रत नकल आपवा बदल श्रीविमलगच्छ उपाश्रय ज्ञानभंडार अमदावादना ट्रस्टीओनो, प.पू.आ.श्री प्रद्युम्नविमलसूरि म.सा. नो तथा प.पू. मुनिराजश्री जंबूविजयजी म.सा. ना शिष्य प.पू.आ. श्री पुंडरीकरत्नसूरि म.सा. नो खूब-खूब आभार।

संपादनमां पाठ सुधारा माटे पाठने () मां, पाठ उमरो [] मां तथा अनावश्यक पाठ माटे {} नो उपयोग करेल छे।

---

1. कर्तांना विशेष परिचय माटे जुओ ‘सत्यसौभाग्य उपाध्यायनो रास’ रास पद्माकर भा. २, पृ. १८४

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विजयदेवसूरि पुण्यखजानो

॥ॐ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः॥

दूहा-जिनमुखकमलनिवासिनी, श्रुतदेवी समरेवि।
श्री**विजयदेवसूरिंद**ना, गुण गाउं संखेव(वि) ॥१॥

"श्रीविजयदेव" इति **मंत्र** मुख, जे समरइ निसदीस।
तस घरि गाजइ गजघटा[१], नरपति नामइ सीस ॥२॥

श्रीविजयदेव सहकार[२] सम, मन मधुकर झंकार[३]।
जस प्रताप हरषित करि[४], कवि-कोकिल[५] कुहुकार ॥३॥

विजयदेव दिनमणि समो, दिन दिन अधिक प्रताप।
जास वचन-दु(द्यु)ति[६] संहरइ, कुमती(ति)तिमिर-संताप ॥४॥

महावीर सासनधणी, कीधो अविचल पट्ट।
श्री**विजयसेनसूरिसनो**, विजयदेव गुणहट्ट[७] ॥५॥

प्रगटपुण्य कलिकालमां, सकल संघ-कृत-सेव।
श्रीविजयदेवसूरिंदनो, पुन्यउदय कहुं हेव ॥६॥

॥ राग-देशाख ॥ ढाल-१ ॥

इडर नगर अमरापुरी[८] तोलइ, सुरगण देव(ख)इ ऊभा ओलइं[९]।
जिहां नर नारि तणो प्रतिबिंब, चित्त हुइं मनगिरि अविलंब ॥७(१)॥

तिहां वसइं मेरु महीधर धीर, **साह थिरो** व्यवहारि वीर।
जस धनकोटिं धनद हराव्यो, इम दानइं जग जस गवराव्यो ॥८(२)॥

तस घर घरणी **रुपां** नाम, रूप लावण्य कला अभिराम।
जिहां एहवी नारी गुणरंभा[१०], तिहां दिन दिन वाजइ जय-**भंभा**[११] ॥९(३)॥

शीलगुणइं सा सीता सरिखी, गर्भ धरइं शुभ स्वपनइं हरखी।
अनुक्रमइं जायो[१२] सुंदर पुत्र, जेह चलावइं देशनां सूत्र ॥१०(४)॥

विक्रम संवत सोल तेत्रीस**(१६३३)**, जिहा दुर्भिक्ष नहिं परवेश।
हेमवंत आवइं लोक सुवेस, धनवंत भोगवइ भोग असेस[१३] ॥११(५)॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रथम पोस शुदि तेरस दीस[१४], वृष लगनिं हुइ अधिक जगीस।
सुत सोहावइं कुल-यश-पूर, जिम उदयाचल ऊगतइं सूर ॥१२(६)॥

दिन दिन वाजइं मंगल नू(तू)र[१५], ए तो पुण्य तणो अंकूर।
शुभ मुहु(हू)रत दीधुं तस नाम, **वासण** इति शुभ गुणमणि खांण ॥१३(७)॥

दूहा- शुभ लक्षण-लक्षित हुओ, परगल[१६] पुण्य-सगाल[१७]।
अर्ध चंद्र सम दीपतुं, सुबुद्धि-सिरोमणि भाल ॥१४(१)॥

नंदनवन चंदनतरु, दीपइं परिमल पूर।
साह थिरा कुल तिम जयो, वासणजी गुणभूर ॥१५(२)॥

॥ राग-धन्यासी ॥ ढाल-२ ॥

जिम जिम नंदन वाधइ, तिम जन गुणमणि साधइ।
माता हरख न माय, दिन दिन उछव थाय ॥१६(१)॥

अष्ट संवत्सर[१८] मांन, सीखइ सकल विज्ञान[१९]।
दीपइ सुंदर रूप, सुरपतिनिं प्रतिरूप[२०] ॥१७(२)॥

वदन सुधाकर[२१] तोलइ, वचन अमीरस बोलइ।
सकल सुलख्यण[२२] सोहइ, सज्जनजन मन मोहइ ॥१८(३)॥

कुलदीपक कुलचंद, कुल-सुरतरू-वर-कंद।
कुलमंदिर-वर-थंभ, कुलकामिक(त?)-सुरकुंभ ॥१९(४)॥

दूहा- एणइ अवसरि **तपगछ**पति, श्रीविजयसेनसूरिंद।
अहमदावादइ आवीआ, भविक-कमल-कुल-चंद ॥१॥

साह थिरा सुत साहसीह, हरखइ वंदन काज।
जननी साथइं चालीओ, लीधो उत्तम साज[२३] ॥२॥

वासण वंदइ हरखस्यूं, श्रीविजयसेन गुरु-सीह।
ज्ञानादिकगुणभवनमां, जिणि लखावी लीह[२४] ॥३॥

॥ राग-केदारो ॥ ढाल-३॥

श्रीगुरुवचन समरस भर्या, पुण्यतरू-विजय सुभ हेत रे।
वासणजी सुणि रंगस्यूं, भव-महोदधि-सेत[२५] रे ॥४(१)॥ श्री गरु...(आंकणी)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुर तिरि नारकी भव तणा, दुर्लभ मनुज अवतार रे।
तेमांहि दुर्लभ कुल जीआ[२६], धर्म अधर्म विचार रे ॥५(२)॥ श्री गुरु...

दुविध कह्युं जिनधर्म ए, श्रावक साधुनिं भेद रे।
बार व्रत पंच महाव्रत, वारवा[२७] भवभय-खेद रे ॥६(३)॥ श्री गुरु...

श्रावक व्रत सुखइं साधीइ, दुष्कर साधु-आचार रे।
श्रावक देसविरता हवा[२८], सरवविरति यति सार रे ॥७(४)॥ श्री गुरु...

शिवपुरमारग दो हवा, सम{य?} ते(ने) विषम ज होय रे।
बहु दिन जाइ सम-मारगिं, अलप दिन विषम-पंथ जोय रे ॥८(५)॥ श्री गुरु...

इति उपदेस वासण सुणी, साधुधर्म दीइ चित्त रे।
वीर ते विषम कारज भडइ[२९], एह मानी मनि चित्त रे ॥९(६)॥ श्री गुरु...

इम सुणी धरम रूपां सती, अधिक धरइ धर्मनूं ध्यान रे।
दोई संवेगरस-रंगस्यूं, कहइ द्यो संयम दान रे ॥१०(७)॥ श्री गुरु...

संवत सोल त्रइतालीसइ**(१६४३)**, जननी साथइं गुरु हाथिं रे।
माह शुदि दशमी दिनइं, वासण व्रत लीइ उछव साथइं(थिं) रे ॥११(८)॥ श्री गुरु...

दूहा- सुभ लगनिं निज कर दीइ, संयमश्री गणधार।
तिम वली **विद्याविजय** इति, नाम ठविं गुरु सार ॥१२(१)॥

थोडइ वेस[३०] सीखी सुमति, सकल साधु-आचार।
सानुयोग[३१] तव अभ्यसइ, अंग उपांग विचार ॥१३(२)॥

अंग वेद षट च्यार जे, मीमांसा सुपुराण।
धर्मशास्त्र तिम तर्क जे, तेहनो हवो बहु जाण ॥१४(३)॥

सुभ विद्यामंदिर हवो, विद्याविजय अपार।
तिम दर्शन चारित्र गुण, **वयरसीह** अनुसार ॥१५(४)॥

सर-सरस**([१६]५६)** विद्यमान जे, विक्रम संवत फार[३२]।
गुरु द्यइ विद्याविजयनिं, पंडितपद गुणसार ॥१६(५)॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ राग-गोडी ॥ ढाल-४ ॥

एक दिन गुरु मन चिंतवइ रे, करवा गणधर सार।
सूर(रि)मंत्र आराधवा, प्रगट-प्रभा उदारो रे
पुन्य उदइ जोवो, पुन्यइ वंछित होय रे, पुन्य..(आंकणी) ॥१७(१)॥

सूरिमंत्र आराधवा रे, निश्चल धरेइ रे ध्यान।
वाजइ पडह अमारिनो रे, तिम सुर सिद्धि-निदान रे ॥१८(२)॥ पुन्य...

छट्ठ अट्ठमनइ पारणइ रे, आंबिल करइ गुरुराय।
अवि(व)धिन्यानि जाणी करी रे, प्रगट हवो **जखराय**[३३] रे ॥१९(३)॥ पुन्य...

जखि(ख्य)राज कहि किम कहो रे, हुं समर्यो मुनिराज।
सूरिराय सुर प्रतिं कहइ रे, कहो कहिनइ दिउं रे गछराज रे ॥२०(४)॥ पुन्य...

सहगुरु सुणो सो सुर कहइ रे, निरमल गुणभंडार।
कोविद[३४] विद्याविजय छिं रे, तस द्यो गछनो भार ॥२१(५)॥ पुन्य...

इम कही सुर निज पद[३५] गयो रे, हरख्या श्रीगुरुराय।
खंभायत निज दरशनिं, पावन करवानइ ए काज रे ॥२२(६)॥ पुन्य...

संवत सोल सतावनइ**(१६५७)** रे, मास भलो वैशाख।
उज्जल पखि चुथि दिन लीइ रे, लगनि मिलइ जन लाख रे ॥२३(७)॥ पुन्य...

साह श्रीमल्ल सोमो तिहां रे, करइ द्रव्य व(व्य)य सार।
जे देखी निधिनंद(नाथ?)नो[३६], सकल टलइं अहंकार रे ॥२४(८)॥ पुन्य...

वाचकपद देई करी रे, शुभ लगन शुभ अंस[३७]।
सार सूरी(रि)पद थापना, करि गुरु मनि अवतंस[३८] रे ॥२५(९)॥ पुन्य...

वाचक विद्याविजयनिं [रे], नाम ठवइ गुरुराज।
विजयदेव इति जयकरो रे, जय सूरी(रि)-सिरताजो रे ॥२६(१०)॥ पुन्य...

नंदन रितु विधु मित्त**(१६५९)**[1] जे रे[2], वरसइ श्रीगुरुराय।
पुहुता पाटण बहु विधि रे, वंदन ओछव थाय रे ॥२७(११)॥ पुन्य...

---

1. अहीं "नंद"थी ९नो अंक लेवायो छे परंतु संदर्भ ग्रंथोमां वांदणा महोत्सवनी संवत् १६५७ नी मळे छे जे विचारणीय छे.
2. "नंद बान रितु विधु (१६५९) मिते रे" एवुं पद अहीं होवुं जोइए।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दूहा- श्रीविजयसेनसूरीसनो, सूरथी अधिक जगीस।
दिन दिन प्रतपो भुवनमां, नरपति नामिं सीस ॥१॥

विजयदेवसूरिंदनो, दिन दिन वाध्युं वान[३९]।
सत्य कहइ गुण गावतां, सुरपति हर्खइं कान ॥२॥

विजयदेवसूरिंदनो, पामइ जेह प्रसाद।
सत्य कहइ सुणीइ सदा, तस घरि तूरनो नाद ॥३॥

विजयदेव गुरुराज ए, एक दिन प्रबल प्रताप।
मदन महीपति जीपवा, करइं कटकनो थाप[४०] ॥४॥

॥ राग- आसाउरी ॥ ढाल-५ ॥

विकट बल प्रगट तट मदन भट भंजके,
सबल बल साज गुरुराज कीने।
शबद सुनि च्यार दिश चक्र चित चमकते,
पंच सद्ध्यान नीसाण[४१] दीने[४२] ॥५(१)॥ विकट...

पंच आचार वड वीर आगइं चलइ,
धरम दश भेद भट फिरइ पासइ।
सकल जन वन बल नाल-गोली[४३] बनइ,
सुणत सब दुसमन[४४] प्राण त्रासइ ॥६(२)॥ विकट...

सकल संजम महाव्रत गज गुलगुलिं[४५],
चल चलइं चरणविधु(धि) तुरंग सूरे।
अष्टदश सहस सीलंगरथ धडहडिं[४६],
खडहडइं[४७] दुसमन देखि दूरे ॥७(३)॥ विकट...

वश कीये चपल चारित्र तुरं(र?)ग[४८] चढे,
प्रबल बल सील सन्नाह[४९] पहिरे।
अतुल जिनआन सिर टोप ओपइ[५०] प्रगट,
कर कीए कुंत जतिकाज हेरइ[५१] ॥८(४)॥ विकट...

तरणि[५२] संतोष तरवारि[५३] तब जगमगिं,
ज्ञान धनुष पणच[५४] समकित गहू रे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलगुण तीर तरकस[५५] सब जब लीए,
तबहि कहइं दुसमन कोण हइं रे ॥९(५)॥ विकट...

सबल बल सज चले सेस सिर सलसलइं[५६],
मदन महिनाथके सुभट सूरे।
पंच मिथ्यात पहिलिं हणि झडझडिं[५७],
झटकि[५८] दश दिश बदन सुजस पूरे ॥९(६)॥ विकट...

मदन महिपति सुनी बात मदमत्त मन,
कोप आटोप[५९] दीइं दमामिं[६०]।
सबल बल सजि सजी सोल सामंत सब,
कूड कषाय नृप निकट धामिं[६१] ॥१०(७)॥ विकट...

अंगरक्षित बने नव(नो)-कखा(षा)ये नविं,
तरणि वर तुरग असवार साजिं।
कुसुम हथिआर सब जबहि हाथइं लिए,
सकल सुर असुर नरनाथ भाजिं[६२] ॥११(८)॥ विकट...

पंच आश्रव भटा[६३] जास भडवाइ[६४] भेडि(टि?),
बार वरती तिहां फिरइ सुभटी।
मोह अति कोह बल सबल सेनापती,
सुनत सुरनाथकी शक्ति विघटी ॥१२(८)॥

गलित मद मोह संक्लेस बल मदनके,
सकल मन काम कंबोज[६५] घोडे।
सबल बल सज करि मदन महीपति धरी,
देसकइं सीम रणरंग दोडे ॥१३(९)॥

कटक भट दोइं रणरंग रोसइ चढइ,
अधिक उत्साह र[ण]तूर वाजइं।
पंच आचार पंच आश्रय भड भिडे,
भीडते आश्रव सुभट भाजइ ॥१८(१०)॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाजते कोप कीए मोह सेनापति,
हांक हथीआरके लाख छोडे।
तबही गुरुराजके कटक भड खडभडे,
सूरके सबहि अभिमान मोडे ॥१४(११)॥

सकल सुर असुर नर देखतिं दोट दिइं,
चोट एक मोह सिर लूट कीनिं।
श्रीगुरुराज सब साज सूरि तबहिं,
वयरीके कटक भंगान दीनिं ॥१५(१२)॥

मदन महीपति महा कोप आटोप कीइं,
धसकि[६६] घूंबड[६७] घसइं युद्ध सूरे।
आय वड वीर रणरंगभूमि जिहां,
हुं कीइ चूर चिहुं चक्र चूरइं ॥१६(१३)॥

दोइ सनमुख रहिं बाणमंडप कीइं,
गगन रवि चंदके बिंब छाहे[६८]।
कुंत[६९] कुंतिं लडइं कायर लडथडइं,
मदन हथीआर सब तबही धाए[७०] ॥१७(१४)॥

श्रीगुरु-तर(रू)णि संतोष तरवारि गहिं,
मदन एक चोर जिम वदन खंचिं[७१]।
कुसुम वृष्टिं करिं अमर गुरुराज सिर,
सुजसके छत्र धरि बहु दिवाजइ[७२] ॥१८(१५)॥

दूहा- मदन महीपति मथन[७३] करि, पुन्यउदयनु पूर।
साह थिरा कुल तिम जयो, वासणजी गुणभूर ॥१॥

विजयदेवसूरिंदनी, कूण लहइं गुणमाल।
सत्य कहइं जस बांहडी, सुरतरु केरी डाल ॥२॥

॥ राग-धन्यासी ॥

सुंदर गुणमणि मंदिर दीपइं, विजयदेवसूरिंदजी।
तपगछगगन विभासन भासइं, प्रकट-तेज दिणंदजी ॥३(१)॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीविजयसेनसूरीश्वरपाटिं, जिनगुण-सुख-माकंदजी[७४]।
उदयो अभिनवो तेजइं दिनकर, जस प्रणमइं मुणिंदजी ॥४(२)॥

जिहां जलनिधि गिरि{मां} जगि[मां] गाजिं, जिहां लगिं मेरु गिरिंदजी।
जिहां शशि सूर तपइ अवनीतलि, तिहां जीवो गुरु-चंदजी ॥५(३)॥

श्री**सोभाग** विबुध पदपंकज, मधुकर परिमानंदजी।
सत्यसौभाग्य कहि चिर प्रतपो, ए गुरु सुखतरुकंदजी ॥६(४)॥

॥ इति श्रीपुण्यखजानो श्रीविजयदेवसूरीश्वर जन्ममहोत्सव-दीक्षा-प्रवरविधानउत्साहःसमाप्तः ॥ शुभ ॥ कल्याणमस्तुः लेखक-पाठकयोः ॥

शब्दकोश

१) हाथीओनो समुह, २) आम्रवृक्ष, ३) गुंजारव, ४) करे छे, ५) कविरूपी कोयल, ६) द्युति-प्रकाश, ७) गुणोनुं संग्रहस्थान (दुकान), ८) इंद्रनी नगरी, ९) श्रेणीमां, पंक्तिमां, १०) गुणथी रंभा-अप्सरा जेवी, ११) विजयभेरी, १२) जनम्यो, १३) सर्व, १४) दिवस, १५) शरणाई, १६) प्रचूर, पुष्कळ, १७) पुण्यनो सुकाळ, १८) वर्ष, १९) विद्या, २०) समान, २१) चंद्र, २२) सुलक्षण, २३) सामग्री, २४) शिरमोरता, श्रेष्ठता, २५) पूल, २६) जीव, २७) रोकवा २८) थया, २९) लडे, ३०) वय, उमर, ३१) अनुयोग सहित, ३२) शुभ, ३३) यक्षराज, ३४) विद्वान, पंडित ३५) स्थान, ३६) कुबेर(?), ३७) सूक्ष्म समय (?), ३८) मुगट समान, ३९) मान, ४०) स्थापना, तैयारी, ४१) नोबत, ४२) वगाड्या, ४३) तोपना गोळा, ४४) ?, ४५) गर्जना करे, ४६) धडधडे, धडधड ध्वनि करे, ४७) खळभळे, ४८) घोडो, ४९) बख्तर, ५०) शोभवुं, ५१) नीरखे, ५२) सूर्य, ५३) तलवार, ५४) धनुषनी दोरी, ५५) बाण भरवानुं भाथुं, ५६) सळवळे, ५७) पडे, नासे(?), ५८) झडपथी, ५९) विस्तार, ६०) दमाम, रोफ, ६१) गाम/जग्या, ६२) दूर थाय, भागी जाय, ६३) योद्धा, ६४) पराक्रमनी ख्याति, ६५) कंबोज देशना घोडा, ६६) ध्रासको-भय अनुभवता, ६७) अनाडी(जंगली) पुरुषो, ६८) ढंकाय जाय, ६९) भालो अथवा बाण, ७०) दोड्या, ७१) पकडे, खेंचे, ७२) शोभे, ७३) नष्ट करी, ७४) आम्रवृक्ष(जेवा).

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अज्ञात कर्तृक

गुरु विहार गहुंली

गजेन्द्र शाह

काव्य प्रकारोमां घणा प्रकारो तेना छंद बंधारणने लईने होय छे जेमके कवित्त, सवैया, चौपाई आदि। आ काव्यप्रकारोमां छंद, अक्षर पंक्ति आदि निर्धारित होय छे। केटलाक काव्य प्रकारो तेना विषयने लईने होय छे, जेम के स्तवन, सज्झाय, स्तुति आदि। आमां कोई निश्चित छंदादि न होता कोईपण तर्ज, रागमां होई शके छे, जेम के आंकणी(टेर)बद्ध ५ गाथा के तेथी वधु गाथावाळी गुणपरक, स्तुतिपरक रचना ते स्तवन, तेवी ज रीते उपदेशपरक कृति ते सज्झाय, आंकणी रहित ४ गाथानी (पहेली गाथामां कोईपण एक जिननी स्तुति, बीजीमां सर्वजिनस्तुति, त्रीजीमां श्रुत स्तुति अने चोथी गाथामां देव-देवीनी स्तुति) कृति ते थोय कहेवाय वगेरे। केटलाक काव्य प्रकारो प्रसंग, मोसम आदिने लईने होय छे, जेम के विवाहलो, फाग, गहुंली आदि। आमां पण स्तवन, सज्झायादिनी जेम आंकणी तथा कोईपण देशी, तर्ज आदि होई शके छे। विशेषता ए के आ कृतिओ खास करीने जे ते प्रसंग पर रचायेल होवाथी तेनो नामोल्लेख ते रीते थतो होय छे। प्रस्तुत प्रसंगे प्रकाशित थती कृति पण आवा ज प्रकारनी रचना छे, जेनुं नाम छे “गुरु विहार गहुंली”।

गहुंली शब्द वर्तमानमां वपरातो घणो प्रसिद्ध शब्द छे। सामान्य रीते गुरु भगवंतोना ग्राम प्रवेश, व्याख्यानादि के जिनालयादिमां अक्षत द्वारा करातो नंदावर्त के स्वस्तिक तेने गहुंली कहेवाय छे। स्वस्तिकने मांगलिक प्रतिक तरीके जोवाय छे। तेमां चार गति अंतना प्रतिकरूपे स्वस्तिकमां चार छेडा होय छे। चार गतिनो अंत करीने पांचमी सिद्धगति प्राप्त करवा सिद्धशिला कराय छे। मुक्तिफळनी प्राप्तिना संकेतरूपे सिद्धशिला पर फळ मूकवामां आवे छे। चार गतिथी मुक्ति भणी जवामां सहायक दर्शन, ज्ञान, चारित्र होय छे तेनी आराधनाना प्रतिकरूपे स्वस्तिक अने सिद्धशिलानी वच्चे अक्षतनी त्रण ढगली कराय छे। आ प्रकारे थती अक्षतनी गहुंलीमां सामान्य स्वस्तिकथी लई संसारना भवभ्रमणना अंतरूप नंदावर्त आदि प्रसंगोपात अनेक प्रकारोमां गहुंलीओ कराती होय छे। सुशोभन माटे तेना पर वपराता मोती, बदाम, रुपानाणुं तथा रजोहरणादिनी आकृतिओ आदि गहुंलीना वैविध्यमां वधारो करे छे। आम गहुंली कला अने धर्म बन्नेना समन्वयरूप छे। आ थई पाटला आदि पर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कराती आकृतिरूप दृश्य गहुंलीनी वात। एटले के दृश्य अने श्राव्य, आकृति अने गेय कृति रुप बे प्रकारनी गहुंली होय छे। प्रायः आ दर्शनस्वरूप गहुंली करीने श्रवणयोग्य गावामां आवता ते प्रकारना गीत के काव्यने पण गहुंलीना नामे ज ओळखवामां आवे छे। प्रायः आ गहुंलीओ श्राविकाओ द्वारा गवाती होय छे। केटलीक वार श्राविकाओ जोडकणांनी जेम प्रसंगोपात तत्काल गहुंली बनावीने गाई लेती होय छे। त्यारे कोई प्रखर शीघ्रकविनुं स्मरण थया विना रहेतुं नथी।

गहुंलीओ प्रतिष्ठा, सालगीरी, पर्व प्रसंगे, जिनभक्ति महोत्सव, दीक्षा, तप उद्यापन, गुरु भगवंतनुं आगमन, विहार, जिनवाणी श्रवण, संघयात्रा वगेरे प्रसंगोमां गवाती होवाथी तेना विषयमां पण विविधता जोवा मळती होय छे। गहुंलीओनुं विशेष प्रमाण गुरु, व्याख्यान, जिनवाणी ऊपर जोवा मळे छे। गहुंलीओ गुरुगुण, वाणी तथा जे ते प्रसंगोने अनुरूप विचारोने गुंथी लेती होय छे। व्याख्यानना अंते तथा वच्चे पडता अल्प विराम वखते श्राविकाओ गहुंली गावानो अवसर प्रायः चुकती नथी। गहुंली वातावरणमां उत्साह, जागृति अने भावनानी लहेर जगावे छे। गहुंली विना प्रसंग अधुरो लागतो होय छे। गहुंली प्रसंगने शोभावे छे, दीपावे छे। व्याख्यान समये गवाती गहुंलीओमां भगवतीसूत्र, कल्पसूत्र, श्राद्धविधि प्रकरण के अन्य ग्रंथो पर पण गवाती होय छे। जेमां जे ते ग्रंथनो महिमा वर्णवेल होय छे।

ग्रंथ महिमा, गुरु महिमा, उर्मिओनी अभिव्यक्ति, अलंकार योजना, सरळ गेयता जेवां लक्षणोथी गहुंलीए काव्यजगतमां स्वतंत्र काव्य प्रकार तरीकेनी ओळख उभी करी छे। छेल्ला त्रणसो वर्षमां रचायेल समृद्ध गहुंली साहित्य, प्रकाशित पुस्तकोनी संख्या, वर्तमानमां थता सर्वत्र उपयोग आदि जोता आ काव्य प्रकारनी लोकप्रियता केटली अने केवी छे तेनो सहेजे ख्याल आवी जाय तेम छे।

गहुंली मात्र मानवसमाज पूरती अने आजनी ज प्रथा नथी। साक्षात भगवान ज्यां विचरता होय, ज्यां समवसरणमां बार पर्षदा बिराजमान होय त्यां परमात्मा आगळ पण किमती द्रव्य, हीरा, माणेक, मोती आदि रत्नो द्वारा प्रभु आगळ देवीओ, इन्द्राणीओ गहुंली करती होय छे। सीमंधरस्वामी भगवाननी प्रसिद्ध स्तुतिमां उल्लेख छे जेम के-

"महाविदेह क्षेत्रमां सीमंधरस्वामी, सोनानुं सिंहासन जी।
रूपानां त्यां छत्र बिराजे रत्नमणिना दीवा दीपे जी॥
कुमकुम वर्णी त्यां **गहुंली** बिराजे, मोतीना अक्षत सार जी।"

कवि समयसुंदरकृत सीमंधरस्वामीना स्तवननी कडी- **"इन्द्राणी काढे गहुंली**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जी, मोतीना चोक पूराय" कवि ऋषभदास रचित पर्युषणनी थोयनी बीजी गाथाना शब्दो- **"धवल मंगल गीत गहुंली करीए"।**

अत्रे प्रकाशित करेल गहुंली विहार वखते गवाती गहुंली छे। साधु भगवंतो पोताना आचार प्रमाणे चातुर्मास दरम्यान जीवदया हेतु एक स्थळे स्थिरता करता होय छे। शेष काळमां आठ महिना एक जग्याए एक महिनाथी वधु रोकाता नथी। आ भगवान महावीरस्वामीना शासनवर्ती साधु भगवंतोनो आचार छे। आनी पाछळनुं कारण स्थानमोहनो त्याग अने विविध क्षेत्रोना भव्यात्माओने जिनवाणीनो लाभ प्राप्त थाय ते छे। लोकोक्ति छे के-

"वहेतां पाणी निर्मळां, पड्यां गंदां होय।
साधु तो फिरता भला, दाग न लागे कोय ।।"

बीजी उक्ति- **"फरे ते चरे अने बांध्यो भूखे मरे"** घोडाने बंधनथी मुक्त कराय तो फरीने ते चरी शके तेम महात्माओ पण विचरण करे तो तेमना अनुभवज्ञानमां वधारो थाय।

त्रीजी उक्ति-

"स्त्री पीयर नर सासरे, संजयमिया थिरवास।
ए त्रणे होय अळखामणा, जई कोई करो तपास ।।"

जो के जैनसाधु माटे महदंशे श्रावक-श्राविकाओमां एटलो बधो भक्तिभाव अने आदर होय छे के चार महिना स्थिरता पण ओछी पडे छे। चार महिनाना लाभ बाद ज्यारे विहारनी वात आवे छे त्यारे श्रीसंघनी आंखमां आंसु आवी जतां होय छे। तेनो साक्षात पुरावो एटले अत्रे प्रकाशित करती गुरु विहार गहुंली। आशा छे के आ कृति अल्प समयमां ज लोकभोग्य बने अने भाववृद्धिनुं कारण बने।

कृति परिचय

कृतिनो प्रारंभ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजी अने सरस्वती माताना मंगल स्मरणथी करायो छे। आ गहुंली विहार समयनी होवाथी कर्ताए प्रारंभे ज **"नवकल्पी मुनीराजने जी रे, करु वीनती चित लाय"** एम कही नवकल्पी विहारना आचारना विशेषण पूर्वक वात आगळ चलावी छे। विहार गहुंलीमां पण आ गहुंली चातुर्मास पूर्ण थया पछीना विहारनी छे। कविए कृतिना प्रारंभे चातुर्मासार्थे गुरुनी पधरामणीथी लई चारेय महिनानुं स्मरण कर्युं छे। पंच प्रमादना त्यागी, पंचाचारना पालक गुरु आ देशमां (गाममां) पधारतां मननी मुराद पूर्ण थई छे। गुरुवाणीने अषाढ मासना मेघ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साथे सरखावी छे, श्रावणना सरोवर, खीलती वनराजी साथे सरखावी छे, भादरवामां थती विशेष गुरुकृपानो उल्लेख कर्यो छे, आसोमां गुरुवाणीनी आसा अने कारतकमां संभळाती विहारनी वातो आम चातुर्मासना चारेय महिनाने समावी दीधा छे। त्यारबाद कर्ताए गुरुविरहे व्यथित थती श्राविकाना उद्गार, विहार न करवानी भावना व्यक्त करी छे। कविनी भाषा अने प्रस्तुति एटली सुंदर अने भाववाही छे के सहेजे आ कृति वर्तमान प्रचलनमां लोगभोग्य बनी जाय तेम छे। श्राविकाओने गहुंली संग्रहना घरेणा जेवी आ कृतिनी देशी के रागनुं नाम नथी आपेल छतां तेनुं बंधारण अने आंकणी जोता सहेजे राग आवडी जाये तेम छे। आमेय आवी कृतिओना राग बेसाडवामां श्राविकाओ माहेर होय छे ज । कृतिमां प्रत्येक गाथाए तथा छेल्ले तो एक-एक पदे प्रयोजाती आंकणी- **“मोरा गुरुजी म करो आप विहार”** कृतिने विशेष भाववाही बनावे छे। संवादरूपे श्राविकाने ज्यारे गुरु महाराज उत्तर आपे छे त्यारे आंकणीना शब्दो बदलाय छे- **“चतुर नर अतिशय राग निवार”।** कृतिनो खरो आस्वाद तो संपूर्ण कृति वांच्या पछी ज आवे तेम छे। कृति सुगम अने सरळ होवाथी विशेष परिचय आपवानी आवश्यकता रहेती नथी ।

कर्ता परिचय

प्रस्तुत कृतिना कर्ता विषे कृतिमां कोई उल्लेख नथी । अन्य संदर्भोथी पण कर्ता विषे माहिती उपलब्ध थई शकी नथी। रचना उपरथी कर्ता सारा कवि जणाय छे अने तेमनी अन्य रचनाओ पण होवी जोइए।

प्रत परिचय

प्रस्तुत कृतिनुं संपादन आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिरनी प्रत नं. ११७९६७ना आधारे कर्युं छे। ज्ञानमंदिरमां कृतिनी १३ जेटली हस्तप्रतो छे आ तमाम प्रायः विक्रम १९वी अने २०वी सदीनी छे। तेमांथी ऊपरोक्त प्रत सुवाच्य अने शुद्ध जणातां संपादनार्थे लीधी छे। मात्र एक ज पानानी प्रत छे, तेमां मात्र आ एक ज कृति उल्लिखित छे। प्रतनो समय १९वी सदी जणाय छे। विशेष पाठ गेरू लाल रंगथी अंकित छे। अंक अने दंड लाल स्याहीथी करेल छे। पत्रांक स्थाने सादा रेखा चित्र करेल छे। आ कृतिनी अन्य प्रतो करतां प्रस्तुत प्रतना अक्षरो वधु सुंदर अने सुवाच्य छे। प्रतनी स्थिति सारी छे। प्रतना प्रारंभे भलेमिंडी छे अने त्यारबाद “मुनि पधरावजो पोसासालमा। इति विनती स॥” कडी लखेल छे जे अन्य कृति संदर्भेनी होता काढी नाखेल छे। अन्य एकाद प्रतमां विविध कृतिओ छे । तेमां आ कडी छे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अने पछी गुरु विहार गहुंली चालु थाय छे। संभव छे के प्रतिलेखकनी भूलथी कोई प्रतनी प्रतिलिपि करतां आ कडी प्रस्तुत प्रतमां आवी गई होय। कृति प्रकार नाम बाबते केटलीक प्रतोमां विनती, क्यांक गहुंली, स्तुति छे, तो क्यांक गीत पण हशे, अमें कृतिने अनुरुप गहुंली प्रकार राख्यो छे। कृति प्रकार नाम हस्तप्रतोमां गुंहली, गहुंली, घोली विगेरे देशी शब्दान्तर साथे जोवा मळे छे।

कोबानी ज अन्य प्रत १२७७७६ना आधारे अमे मूळपाठमां केटलाक सुधार कर्या छे ते आ प्रमाणे- गाथांक '१५' लहिया द्वारा आपवो रही जतां अमें आपेल छे। गाथा १६मां चोथुं चरण खूटतां उमेरी दीधेल छे। प्रतिलेखक द्वारा गाथांक १७ रही गयेल तथा आ गाथानां छेल्ला बे चरण खूटतां उमेर्यां छे। गाथा १८मां रहेल पाठ 'ते फलसे' नी जग्याए 'दी' उमेरीने 'ते दी फलसे' करेल छे।

गुरु विहार गहुंली

श्रीशंखेश्वर पाये नमी जी रे, सरस्वती करी सुपसाय।
नवकल्पी मुनीराजने जी रे, करु वीनती चित लाय॥
मोरा गुरुजी म करो आप विहार॥१॥

पांच महाव्रत पालता रे, वली पंचारे आचार।
प्रमाद पंचे दूर करी जी रे, त्रण गुपती चितधार ॥२॥ मो०...

मुनि आचार एम पालता जी रे, आव्या एणे रे देश।
सफल थयो आज माहरो जी रे, मननो सर्व उमेद ॥३॥ मो०...

असाढ मास अति आकरो जी रे, जल वरसे वहू धार।
तम मुनि जीणवांणी तणो जी रे, करता मुखे उचार ॥४॥ मो०...

सावण सरवर देखीने जी रे, वनराइ सवी फुल।
जिणवाणी गुरु मुखे कहे जी रे, कौन करे तस मूल ॥५॥ मो०...

भाद्रवो भले गाजीयो जी रे, फली हमारी आस।
हरख थयो हमने घणो जी रे, खोबले ठवे गुरु वास ॥६॥ मो०...

आसोइ आस्या हती जी रे, गुरु रहसे एणे ठाम।
जिनवाणी श्व(श्र)वणे सु सुणी जी रे, सरसे हमारा काम ॥७॥ मो०...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कारतक मास कुण मुख थकी जी रे, मेरे सुण्यो ए सवाल।
वात करसे वीहारनी जी रे, वली जासे आजकाल ॥८॥ मो०...

एटला दी(दि)न मुजने हती जी, रेहेवानी वली आस।
वात सुणी आज विहारनी जी रे, जीवडो थयो रे उदास ॥९॥ मो०...

गुरु पोसाले जावती जी रे, करती सामायिक सार।
गुरु थी(वी)रहो दुखदाइ छे जी रे, ए मुजने संताप ॥१०॥ मो०...

कारतक शुदि चौदश लगे जी रे, एम जुरु रे अपार।
पुनम दिन वाणी थकी जी रे, नयणे आशुनी धार ॥११॥ मो०...

केड बांधी अति आकरी जी रे, वली लीधी पोथी साथ।
खंभे लीधा पातरां जी रे, लेई चेलाने साथ ॥१२॥ मो०...

पुठ वाली जोयुं नही जी रे, चाल्या देश विदेश।
रोती ने जोती वली जी रे, सेहती अनेक कलेश ॥१३॥ मो०...

गुरु भांखे सुण श्रावीका रे, मुनि सुपणारुप धार।
सुख हेतु सहुनें घणु जी रे, दाण दया रे आधार ॥१४॥ मो०...

चतुर नर अतिशय राग निवार। मो०... तमने कहसु वारोवार। मो०...
मुझ नयणे आंसुनी धार। मो०... गुरु विरहो अग्निज्वाल ॥१५॥ मो०...

हवे मुजने कुण आधार। मो०... जीम माय विनानो बाल। मो०...
तुमे छो मुजने आधार। जेम पृथवी सहे वली भार ॥१६॥ मो०...

जगजीवने तुम आधार। मो०... हु छु तुम चरणनो दास। मो०...
अमने आपो मोक्ष आवास। मो०... हवे पूरो मननी आस ॥१७॥ मो०...

वली करज्यो इहा चोमास। मो०... ते दी फलसे हमारी आस। मो०...
गुरुराज सुणो मोरी वात। मो०... वली छो तुम उतम जात ॥१८॥ मो०...

तुम गुणनो न लहु पार। मो०... मुज तार तार मुझ तार।
ए वीनति चितमा धार। मो०... गुरुजी म करो आप विहार। ॥१९॥ मो०...

॥ इति विहार विनती ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्मकथानुयोगनी महत्ता अने श्री देवभद्रसूरिकृत कथारत्नकोश

मुनि श्री पुण्यविजयजी

(गतांक से जारी...)

४. कथारत्नकोशग्रंथनो परिचय

प्रस्तुत ग्रंथ प्राकृत भाषामां गद्य-पद्यरूपे अतिप्रासादिक सालंकार रचनाथी रचायेलो अने अनुमान साडाअगियारहजार श्लोकप्रमाण छे। बहु नानी नहि, बहु मोटी पण नहि, छतां संक्षिप्त कही शकाय तेवी मौलिक पचास कथाओना संग्रहरूप आ कृति छे। प्रस्तुत ग्रंथ मुख्यत्वे प्राकृत भाषामां रचायेलो होवा छतां तेमां प्रसंगोपात्त संस्कृत अने अपभ्रंश भाषानो उपयोग पण ग्रंथकारे करेल छे, खास करी दरेक कथाना उपसंहारमां उपदेश तरीके जे चार श्लोक अने पुष्पिका आपवामां आव्यां छे ए तो संस्कृत भाषामां ज छे।

आ ग्रंथमां सम्यक्त्व आदि तेत्रीस सामान्य गुणो अने पांच अणुव्रत आदि सत्तर विशेष गुणोने लगती कथाओनो समावेश करवामां आव्यो छे। धर्मकथाओना ग्रन्थोमां शृंगार आदि रसोनी विपुलताने लीधे धर्मकथानुं धर्मकथापणुं गौण थवानो दोष जेम केटलीक धर्मकथाओनी रचनामां आवी जाय छे तेम आ ग्रंथमां ग्रंथकारे जरा पण थवा दीधुं नथी, एटलुं ज नहि, पण प्रस्तुत धर्मकथाग्रंथमां शृंगार आदि जेवा रसोनो लगभग अभाव छतां आ धर्मकथाग्रंथ शृंगार रहित बनी न जाय अथवा एमांनी धर्मकथाना वाचन के श्रवणमां वक्ता के श्रोतानी रसवृत्ति लेश पण नीरस अथवा रुक्ष न बनी जाय ए विषेनी दरेक चोकसाई ग्रंथकारे राखी छे। प्रस्तुत ग्रंथमां ग्रंथकार जे जे गुण विषे कथा कहेवी शरू करे छे तेना प्रारंभमां, कथाना वर्णनमां अने एने उपसंहारमां, ते ते गुणनुं स्वरूप, तेनुं विवेचन अने तेने लगता गुण-दोषो लाभ-हानिनुं निरूपण तेमणे अति सरस पद्धतिए कर्युं छे।

उपर जणाववामां आव्युं तेम आ ग्रंथमां तेत्रीस सामान्य गुण अने सत्तर विशेष गुण मळी जे पचास गुणोनुं वर्णन करवामां आव्युं छे, ते उपरांत प्रसंगोपात्त बीजा अनेक महत्त्वना विषयो वर्णववामां तेम ज चर्चवामां आव्या छे, जेवा के–उपवनवर्णन, ऋतुवर्णन, रात्रिवर्णन, युद्धवर्णन, स्मशानवर्णन आदि वर्णनो; राजकुलना परिचयथी थता लाभो, सत्पुरुषनो मार्ग, आपघातमां दोष, देशदर्शन, पुरुषना प्रकारो, नहि करवा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लायक, करवा लायक, छोडवा लायक, धारण करवा लायक, विश्वास नहि करवा लायक आठ आठ बाबतो, अतिथिसत्कार आदि नैतिक विषयो छींकनो विचार, राजलक्षणो, सामुद्रिक, मृत्युज्ञाननां चिह्नो, अकालदंतोद्गमकल्प, रत्नपरीक्षा आदि लोकमानसने आकर्षनार स्थूल विषयो; देवगुरुधर्मतत्त्वनुं स्वरूप, गुरुतत्त्वव्यस्थापनवादस्थल, अष्ट प्रातिहार्यनुं स्वरूप, वेदापौरुषेयत्ववादस्थल, धर्मतत्त्वपरामर्श, रत्नत्रयी, जिनप्रतिमाकारधारी मत्स्य अने कमळो, जिनपूजानुं विस्तृत स्वरूप, सामान्य धर्मोपदेश, मूर्तिपूजाविषयक चर्चास्थल, हस्तितापस तथा शौचवादमतनुं निरसन, अनंतकाय कंदमूळना भक्षणनुं सदोषपणुं आदि गंभीर धार्मिक विचारो; उपधानविधि, ध्वजारोपण विधि, मूर्तिप्रतिष्ठा विधि आदि विधानो अने ते उपरांत अनेक कथाओ, तथा सुभाषितादि विविध विषयो आलेखवामां आवेला छे। आ बधी वस्तु प्रस्तुत ग्रंथनी विषयानुक्रमणिका जोवाथी ध्यानमां आवी शकशे। आ उपरथी प्रस्तुत ग्रंथकार केटला समर्थ अने बहुश्रुत आचार्य हता अने तेमनी कृति केटली पांडित्यपूर्ण अने अर्थगंभीर छे ए पण समजी शकाशे।

(क्रमशः)

मुखपृष्ठ चित्र परिचय

आ प्रतिमा विजयदेवसूरि म.सा. ना पोताना सत्ताकाळमां तेमना पट्टशिष्य श्रीविजयसिंहसूरिजी द्वारा विजापुरमां प्रतिष्ठित करायेल छे। (विजयदेवसूरि म.सा.नो निर्वाण सं. १७१३नो होवाथी आ प्रतिमा तेमनी हयातीमां प्रतिष्ठित थयेल गुरुप्रतिमा गणाय, विजयदेवसूरि निर्वाण संवत माटे जुओ 'विजयदेवसूरि निर्वाण रास' रासपद्माकर पृ. १३२)

प्रतिमा लेख- ए६०॥ सं० १७०१ वर्षे मार्गशीर्ष सित ६ सोमे श्रीनंदरबारवास्तव्य सा० रूपजी भार्या रूपादे सुत रत्नसाह बा० पू० (बाई पुत्र?) हीरचंद्राभ्यां निजगुरुभक्त्या तपागच्छाधिराज- भ० श्रीहीरविजयसूरिपट्टाकाशप्रकाशदिनमणि श्रीविजयसेनसूरीश्वरपट्टपाथोनिधिसमुल्लासे निशामणि दिल्लीपतिसाहि श्रीजिहांगीरप्रदत्त"जिहागीरि महातपाबिरुदधारि" विद्यमानतपगच्छनायक भट्टारकसार्वभौमभट्टारक श्रीविजयदेवसूरीणां मूर्ति कारिता । प्रतिष्ठिता च तदीय पट्टालंकार श्रीविजयसिंहसूरिभिः। वीजापुरे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुस्तक समीक्षा

रामप्रकाश झा

ग्रन्थ नाम : श्रीमद् देवचन्द्रजीकृत चौवीसी, **सम्पादक :** श्री प्रेमलभाई कापडिया, **प्रकाशक :** हर्षदराय हेरिटेज, मुम्बई, **प्रकाशन वर्ष :** वि. सं. २०६१, **भाषा :** गुजराती, हिन्दी, **विषय :** देवचन्द्रजी कृत चौवीशी के शुद्ध स्वरूप का विवेचन.

श्रीमद् देवचन्द्रजी के द्वारा रचित चौवीसी पाठक के हृदय में भावोल्लास जगानेवाला है। पूज्य देवचन्द्रजी ने अपने स्तवनों के द्वारा शुद्ध आत्मस्वरूप का ज्ञान, प्रभु का आलम्बन तथा आत्मविकासलक्षी मार्ग को अद्भुत रूप से प्रकाशित किया है। इन स्तवनों का जैसे-जैसे स्मरण, चिन्तन और मनन किया जाता है, वैसे-वैसे हृदय में प्रसन्नता और हर्ष का अनुभव होता है और हृदय पुलकित हो जाता है।

परमात्मा की अतुलनीय व अद्वितीय गुणसंपदा का वर्णन करते हुए पूज्यश्री ने स्तवन के रूप में भक्तिगंगा का नीर बहाया है। पूज्य देवचन्द्रजी के द्वारा रचित चौवीसी में आत्मविकासलक्षी मार्ग के ऊपर प्रकाश डाला गया है। उन्होने भक्तिरस, उपादान निमित्त कारण, निश्चय व्यवहार, आत्मा-पुद्गल, द्रव्यगुणपर्याय, अपवाद-उत्सर्ग सेवा, कारण-कार्य, प्रभु की अनंत प्रभुता, षट्कारक, अव्याबाध सुख, सामान्य विशेष स्वभाव, अस्ति-नास्ति स्वभाव, प्रशस्त व शुद्ध भावरूप पूजा तथा निःसंगता जैसे अनेक आध्यात्मिक गहन तत्त्व की अलौकिकता को प्रगट किया है।

इन स्तवनों का आलेख करते समय पूज्यश्री के स्वोपज्ञ बालावबोध तथा **“परमतत्त्व की उपासना”** आदि अनेक ग्रंथों का उपयोग किया गया है। स्वोपज्ञ बालावबोध में उन्होने आगम तथा अन्य अनेक सुंदर ग्रंथों से संस्कृत-प्राकृत अवतरणों का भी अर्थसहित उल्लेख किया है। आचार्य श्री सोमचंद्रसूरीश्वरजी म.सा ने इन अवतरणों का संशोधन किया है।

प्रस्तुत ग्रंथ में स्तवनों का अर्थ और सार पूज्य कलापूर्णसूरीश्वरजी कृत **“परमतत्त्व की उपासना”** में से लिया गया है तथा हिंदी अनुवाद पंडित बसंतीलालजी नलवाया (रतलाम) ने किया है। स्वोपज्ञ बालावबोध की शुद्धि के लिये आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा की प्राचीन हस्तप्रतों का उपयोग किया गया है।

इसके अतिरिक्त ग्रन्थ की सुन्दरता हेतु प्राचीन चित्र, चित्रपट्ट, हाशिया, फुल्लिका आदि विविध ग्रंथों, संग्रहालयों तथा व्यक्तिगत संग्रहों में से लेकर उनका

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भी यथोचित उपयोग किया गया है। स्तवन की मूल गाथाएँ स्वर्णपट पर लाल-पीले तथा भूरे रंग से लिखवाई गई हैं। गाथाओं के हाशिया और बोर्डर विविध रंगों से सुसज्जित किये गये हैं।

पुस्तक के प्रकाशन में आचार्य श्री कलाप्रभसूरीश्वरजी म. सा., श्री कल्पतरुविजयजी म. सा. तथा श्री कीर्तिचंद्रविजयजी म. सा. की सुन्दर प्रेरणा प्राप्त हुई है।

प्रस्तुत ग्रंथ का प्रकाशन एवं मुद्रण भी बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक है। आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा परिवार का यह सौभाग्य है कि प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन में प्रकाशित अधिकांश प्राचीन चित्रों को आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर के सम्राट् संप्रति संग्रहालय से लिया गया है।

श्री प्रेमलभाई कापडिया ने प्रस्तुत ग्रंथ का प्रकाशन कर विद्वत्समाज के लिये एक उल्लेखनीय व प्रशंसनीय प्रयास किया है। जिसे समस्त जैन संघ व विद्वत्समाज वर्षों तक याद रखेगा। संघ, विद्वद्वर्ग तथा जिज्ञासु विद्वानों की यह अपेक्षा है कि भविष्य में भी इस प्रकार के सुन्दर प्रकाशन होते रहें। इस प्रकार के साहित्यसर्जन की यात्रा सदैव जारी रहे, ऐसी शुभेच्छा है।

वर्तमान विद्वज्जगत के मूर्धन्य विद्वान श्रीमान् डॉ. सागरमलजी जैन को सादर श्रद्धांजलि

जैनप्राच्यविद्या और साहित्य जगत के प्रख्यात विद्वद्वर्य डॉ. सागरमल जैन ने अपने जीवन में अनेक असाधारण संशोधन कार्य किए व करवाएं हैं। जिनका साहित्यजगत का विद्वद्मंडल लाभ ले रहा है। आपके समाधि मरण से साहित्य जगत को बहुत बडी क्षति पहुँची है।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का आपसे विशेष नाता रहा है। संशोधन-संपादन कार्य हेतु आपसे समय-समय पर आदान-प्रदान होता रहा है। ज्ञानमंदिर में आपके द्वारा संपादित 250 जितनी पुस्तकें व 350 जितने लेखादि कृतियाँ संगृहित हैं।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर परिवार, कोबा आपको भावसभर श्रद्धांजलि अर्पण करता है और श्रुतसेवा के क्षेत्र में योगदान हेतु वाचकवर्ग आपके सदा ऋणी रहेंगे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाचार सार

राष्ट्रसंत पूज्यश्री की शुभनिश्रा में नूतन जिनालय भूमिपूजन एवं शिलान्यास विधान

दि. 8/11/2020 कोबा के समीप कैलासनगर वाटिका में प.पू. राष्ट्रसंत श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में शिखरबद्ध जिनालय का शिलान्यास किया गया। इस जिनालय में मूलनायक श्यामवर्ण श्रीमुनिसुव्रतस्वामी भगवान तथा श्री पार्श्वनाथ प्रभु एवं शांतिनाथ प्रभु की प्रतिमा बिराजित की जाएगी। उपकारी गुरुमूर्ति की प्रतिष्ठा भी प्रस्तावित है। जिनालय निर्माण का लाभ पेथापुर निवासी शाह जयंतिलाल सोमचंद के सुपुत्र महेशभाई तथा धर्मपत्नी मंदाकिनीबेन, हस्ते शाह कौशलभाई, अमीबेन, प्रशम, जीया, हाल निवासी २४ केरेट, देवकीनंदन, अहमदाबाद ने लिया। संपूर्ण कार्य का आयोजन राष्ट्रसंत पूज्यश्री की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में कैलास आराधना केन्द्र के ट्रस्टी तथा अन्य श्रेष्ठिगण श्री हेमंतभाई राणा, श्रीशांतिलालजी मिश्रीमलजी मुणोत, श्रीवंशराजजी भणशाली, श्री मगनलाल तेजराजजी सालेचा व अन्य महानुभावों द्वारा किया जा रहा है।

महान प्रभावशाली श्री घंटाकर्ण महावीरदेव पूजन व हवन

दिनांक : 14-11-2020, निज आसो वद-१४ (काली चौदश) को कोबा तीर्थ के परिसर में राष्ट्रसंत पूज्यश्री की निश्रा में महान् प्रभावशाली श्री घंटाकर्ण महावीरदेव पूजन व हवन सम्पन्न हुआ। काली चौदश के पावन दिन विघ्न व अंतराय को दूर करने तथा इष्ट की प्राप्ति हेतु गुरुमंदिर में सरकारी दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए, यह अनुष्ठान किया गया। प्रभावी महाअनुष्ठान में प्रभावना-संघपूजा तथा साधर्मिकभक्ति के सम्पूर्ण लाभार्थी – गुरुभक्त श्री गौतमभाई कांतिलाल शाह परिवार, हस्ते - श्री दर्शितभाई, शिमोली, आनंद शाह परिवार थे।

शारदा (चोपड़ा) पूजन

कोबा तीर्थ में प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी दि. 14-11-2020 को दोपहर 2:54 बजे ज्ञानमन्दिर के पुस्तक विभाग में चोपड़ापूजन तथा शारदापूजन का कार्यक्रम विधिविधान पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर संस्था के ट्रस्टी श्री श्रीपालभाई शाह, श्री दर्शितभाई शाह, श्री कल्पेशभाई वी शाह तथा श्री डिम्पलभाई मारफतिया एवं गांधीनगर बोरिज तीर्थ के मेनेजर राष्ट्रसंत पूज्यश्री के आशीर्वाद सह उपस्थित होकर पूजन के कार्यक्रम में सहभागी बनें। ज्ञानमन्दिर के पंडितवर्य श्री गजेन्द्रभाई शाह ने जैनपद्धति से शारदापूजन तथा चोपड़ापूजन की विधि कराई। ज्ञानमन्दिर के कार्यकर्त्ता तथा आमन्त्रित अतिथि सीमित संख्या में पूजन के इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए। पूजन के अन्त में गुरु वन्दना की गई तथा पूज्य मुनिवर श्री पुनीतपद्मसागरजी म.सा. ने उपस्थित श्रद्धालुओं को विशेष मांगलिक सुनाया।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिनालय का द्वारोद्घाटन तथा नूतनवर्ष का महामांगलिक

दि.16/11/2020 प्रातः शुभ मुहूर्त्त व शुभवेला में तीर्थ-परिसर में राष्ट्रसंत पूज्यश्री के सान्निध्य में महावीरालय, रत्नमंदिर व गुरुमंदिर का द्वारोद्घाटन उल्लास पूर्वक हुआ।

कोबा तीर्थ से जीवन की उन्नति के लिए – नूतनवर्ष में महाप्रभावसंपन्न मांगलिक एवं गौतम रास का श्रवण सभी गुरुभक्तों ने Aacharya Shri Padmasagarsurishwarji Maharaja YouTube Channel के माध्यम से हुए लाईव प्रसारण से हजारों श्रद्धालु राष्ट्रसंत पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की गुरुवाणी, मांगलिक व आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। इस अवसर पर सरकारश्री के नियमानुसार दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए तीर्थ में उपस्थित श्रद्धालु भक्तों ने पूज्यश्री से शुभाशीर्वाद प्राप्त किया तथा पूज्यश्री के गुरुपूजन का लाभ कार्यक्रम के सम्पूर्ण लाभार्थी गुरुभक्त श्री चिमनलाल पोपटलाल राणा शेठ परिवार, हस्ते – विक्रमभाई चिमनलाल ब्रोकर परिवार ने लिया व पूज्यश्री का गुरुपूजन तथा वासनिक्षेप ग्रहण कर धन्यता का अनुभव किया।

नूतनवर्ष – श्री गौतमस्वामि महापूजन

दिनांक : 16-11-2020, कोबा तीर्थ - गुरुमंदिर के पुनित परिसर में हिंमतनगर निवासी धर्मानुरागी, दानवीर स्वर्गीय श्री जयंतीलाल जयचंदभाई शाह की वार्षिक पुण्यतिथि के निमित्त नूतनवर्ष के मंगल दिन, महामंगलकारी पूजन का आयोजन किया गया। परिवार के परमोपकारी, निर्मल संयम के आत्मसाधक गच्छाधिराज आचार्यदेव श्री कैलाससागरसूरीश्वरजी महाराजा की महती कृपा पुष्करावर्त मेघ के समान निरंतर परिवार पर बरसती रही, स्वर्गीय सुश्रावक श्री जयंतीलालभाई शाह परिवार ने अपने जीवनकाल में गच्छाधिराजश्री की पावन प्रेरणा से अनेक सुकृत कार्य किये, वर्षों से नूतन(बेसता) वर्ष का मांगलिक तथा आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु पूज्य गच्छाधिराजश्री के पास जाते थे, पूज्यश्री के कालधर्म पश्चात् जीवन के उत्तरार्ध तक यानें अंतिम क्षण तक नूतनवर्ष के प्रथम दिन कोबा तीर्थ में उपकारी गुरु की समाधि के दर्शन-पूजा करते थे। पूज्य पिताश्री के आत्मश्रेयार्थे परिवार ने महापूजन का भव्य आयोजन किया, अनंतलब्धिनिधान गुरु गौतमस्वामिजी का प्रभाविक भव्यातिभव्य महापूजन हुआ, जिसमें उत्कृष्ट सामग्री, विशेष मंत्रोच्चार व भावोल्लास के साथ महापूजन सम्पन्न हुआ, इस प्रसंग पर सरकारी दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए श्रद्धालुओं ने महापूजन में लाभ लिया व पूज्यश्री का विशेष आशीर्वाद ग्रहण किया। पूजन के पश्चात् पधारे हुए सभी महानुभावों का स्वामिवात्सल्य तीर्थ के नूतन परिसर में किया गया।

ज्ञानपंचमी के पवन दिन-सम्यग्ज्ञान व श्रुत की देवी सरस्वती का विशिष्ट अनुष्ठान

दि.19-11-2020 प्रातः 9.30 बजे ज्ञानपंचमी के शुभ दिवस श्री महावीर जैन आराधना केंद्र,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कोबा स्थित सकल जैन संघ का गौरवस्थान आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर में पूज्य राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की शुभ निश्रा में सामूहिक ज्ञानपंचमी के देववंदन तथा संगीत की स्वर लहरियों के साथ ज्ञानपूजन का अद्भूत आयोजन किया गया। भक्तिप्रस्तुति श्री आशीष महेता अहमदाबाद द्वारा कि गई। इस अनुष्ठान में पूज्य आचार्य श्री अमृतसागरसूरिजी, आचार्य श्री विवेकसागरसूरिजी, तथा पूज्य गणि श्री प्रशांतसागरजी आदि श्रमण भगवंतों के साथ उपस्थित थे। अनुष्ठान में मनोहारी, 15 करोड 85 लाख से अधिक बीज मंत्र से जापित माँ सरस्वती देवी के समक्ष ज्ञान व श्रुत की आराधना की गई। इस अवसर पर ज्ञानतीर्थ में संग्रहित विशिष्ट व महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की प्रदर्शनी भी रखी गई थी। उसमें ताडपत्र के उपर लिखे गये 45 आगमों के अतिरिक्त अन्य मुद्रित व काष्ट फलक पर लिखित वर्णमाला, अगरपत्र, भोजपत्र आदि के उपर लिखित विशिष्ट ग्रंथों की भव्य झांकी तथा जैनधर्म ग्रंथों के अतिरिक्त ज्योतिष, आर्युर्वेद तथा शिल्प कला के विशिष्ट ग्रंथों को भी प्रदर्शित किया गया था।

प्रस्तुत अनुष्ठान में श्रद्धालु भक्तों के द्वारा शुद्ध धवल (श्वेत) वस्त्र धारण कर सरकार के नियमानुसार सामाजिक दूरी का पालन करते हुए पूजन अनुष्ठान तथा सामूहिक आरती की गई। इस अवसर पर गुजरात के शिक्षामंत्री श्री भूपेन्द्रसिंह चुडासमा विशेष रूप से उपस्थित होकर अनुष्ठान में सहभागी बनें । इस पूजन के सम्पूर्ण लाभार्थी श्रीमती मंजुलाबेन जितेंद्रभाई शाह परिवार को संस्था के द्वारा शाल व श्रीफल से सम्मानित किया गया।

अनुष्ठान के इस पावन प्रसंग पर राष्ट्रसंत परम पूज्यश्री ने सभा को संबोधित करते हुए कहा की अज्ञानता के अंधकार से मुक्त होकर ज्ञान के प्रकाश में जीवन यात्रा की पूर्णता को प्राप्त कर सकते है और श्रुतज्ञान की आराधना से भविष्य का निर्माण कर सकते है। निर्मल बुद्धि के लिए विचारों को शुद्ध करना आवश्यक है। हमे प्रतिदिन माँ सरस्वतीदेवी की आराधना करनी चाहिए और नई पीढी को भी सम्यग्ज्ञान का संस्कार देना चाहिए। ज्ञान प्रकाश देता है जिससे भविष्य का निर्माण होता है अतः ज्ञान की आशातना से हमें बचना चाहिए ज्ञान ही एकमात्र ऐसा अक्षयतत्त्व है जो कभी भी, किसी भी अवस्था में मनुष्य का साथ नहीं छोडता है।

इस अवसर पर श्रद्धालु भक्त व ज्ञानमंदिर के कार्यकर्ताओं के द्वारा सरस्वती माता की स्वर्ण आभूषण पूजा हेतु द्रव्य अर्पण किया गया। कार्यक्रम के लाभार्थी श्री संजय जितेंद्रभाई शाह, सोनल संजय शाह, परख, मोक्षित संजय शाह द्वारा उपस्थित सभी आराधकों की संघपूजा व अतिथिओं की साधर्मिक भक्ति भी रखी गई थी।

राष्ट्रसंत पूज्यश्री का चातुर्मास परिवर्तन कार्यक्रम सानंद संपन्न

दिनांक: 01-12-2020 कार्त्तिक पूर्णिमा के दिन श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा में आत्मलक्षी चातुर्मासार्थ बिराजमान राष्ट्रसंत आचार्यदेव पूज्य गुरुदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा आदि सूरि-पदस्थ तथा मुनिवरों का चातुर्मास परिवर्तन सानंद संपन्न हुआ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इस अवसर पर प्रातः 9.30 बजे सामूहिक श्री शत्रुंजय पट्ट दर्शन, जिनचैत्यजुहार व भाव स्पर्शना में गिरिराज की स्तुति, स्तवना से सभी शत्रुंजयमय बने तत् पश्चात् सभी श्रद्धालुओं ने अक्षत से शत्रुंजय पट्ट को बधाया। तीर्थ परिसर से शहनाई वादन के साथ राष्ट्रसंत पूज्यश्री सभी श्रमण भगवंतों का मंगल प्रयाण कर श्री कैलासनगर वाटिका में लाभार्थी सेठ श्री रसिकभाई के. शाह परिवार के गृहांगण में प्रवेश किया।

गुरुवंदन व मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। प्रासंगिक प्रवचन में राष्ट्रसंत पूज्यश्री ने शत्रुंजय तीर्थराज की महिमा तथा कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य श्री हेमचंद्रसूरिजी के जीवन प्रसंगों का वर्णन किया। प्रवचन के बाद चातुर्मास के लाभार्थी अहमदाबाद (खवासा म.प्र.) निवासी श्रीकान्ताबहन रणजीतमलजी वागरेचा (जैन) परिवार ने अपने हृदय के भाव व्यक्त किए। श्री कैलाससागर वाटिका में निर्माणाधीन श्री मुनिसुव्रतस्वामी परमात्मा के भव्य जिनालय के लाभार्थी परिवार ने पूज्यश्री के आशीर्वाद ग्रहण किए और जिनालय के लाभार्थी परिवार का बहुमान चातुर्मास परिवर्तन के लाभार्थी तथा जिनालय समिति के द्वारा किया गया। तत्पश्चात् चातुर्मास लाभार्थी परिवार के द्वारा आभार व्यक्त किया गया। सेठ श्री आणंदजी कल्याणजी पेढी के व श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा के ट्रस्टी श्री श्रीपालभाई द्वारा लाभार्थी परिवारों की अनुमोदनादि स्वरूप औपचारिक प्रस्तुति की गई। अंत में चातुर्मास परिवर्तन के लाभार्थी सेठ श्री रसिकभाई के. शाह द्वारा पूज्य गुरुदेव के उपकारों का स्मरण करते हुए कहा गया कि पिछले 50 वर्षों से गुरुदेव का हमारे परिवार के उपर उपकार रहा है। इनके सदुपदेश से छोटे-बडे लाभ हमें मिलते रहे हैं। स्व. इंदिरा गांधी के समय में ई.1976 के सांप्रदायिक हिंसा जैसे कठिन समय में उस्मानपुरा में पू. गुरुदेव के चातुर्मास में "आर्थिक समस्याओं का आध्यात्मिक उपाय" पर प्रवचन रखा गया था, जो विशेष यादगार रहा। पूज्य गुरुदेवश्री की स्मृतिओं का गान करते हुए वर्तमान लाभ हेतु आभार व्यक्त किया था। चातुर्मास परिवर्तन के भाग्यशाली परिवार मातु श्री मंजुलाबेन रसिकलाल केशवलाल शाह परिवार द्वारा सभी महानुभावों का स्वामिवात्सल्य किया गया।

श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम में राष्ट्रसंतश्री का पदार्पण

ता. 02-12-2020 के दिन कोबा तीर्थ के समीप श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम के परिसर में डॉ.आत्मानंदजी के जन्मदिन के उपलक्ष में राष्ट्रसंत पूज्यश्री अपने शिष्य परिवार के साथ पधारें।

राष्ट्रसंत पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा का आश्रम के द्वार पर अक्षत द्वारा गहुंली करके धर्मानुरागी बेनश्री शर्मिष्टाबहन, ट्रस्ट मण्डल तथा साधक श्री सुरेशजी ने वंदन-अभिनंदन करके भव्य स्वागत किया। राष्ट्रसंत पूज्यश्रीने सभा को संबोधित करते हुए कहा की – डॉ. आत्मानंदजी के जाने के बाद भी लोगों की स्मृति में आज भी जीवंत है। कई बार सत्संग करने का मुझे अवसर मिला, उनका सौहार्द, उनका आंतरिक स्नेह और उनके

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीवन व सद्भावना से अनेक व्यक्तियों को प्रेरणाएँ मिलती रही। अपने जीवनकाल में अनेक आत्माओं को साधना के क्षेत्र में जोड़ा। उन्होंने साधना का सुंदर केंद्र बनाकर आत्मार्थिओं के लिए अर्पण किया, आश्रम का उपयोग आत्मसाधना में हो यह उनकी मंगल भावना और प्रेरणा रही। जन्मदिन पर हार्दिक शुभकामना देता हूं और उनके गुणों का अनुमोदन करता हूँ। जन्मदिन के अवसर पर श्रीमद् राजचन्द्र वचनामृत आधारित 213 स्वाध्याय Audio-MP3 का लोकार्पण किया गया और राष्ट्रसंत पूज्यश्री तथा डॉ. कुमारपालभाई देसाई को अर्पण किया गया। राष्ट्रसंत पूज्यश्री के साथ पूज्य आचार्य श्री अमृतसागरसूरिजी, पूज्य आचार्य श्री हेमचन्द्रसागरसूरिजी आदि मुनिगण विशेषरूप से पधारे। कार्यक्रम के अंत मे डॉ. राजेशभाई ने राष्ट्रसंत पूज्यश्री के उपकार स्मरण करते कृतज्ञता के भाव प्रस्तुत किये। इस अवसर पर उपस्थित श्रोतागण व ट्रस्ट मण्डल, कार्यकर्ताओं राष्ट्रसंत पूज्यश्री के दर्शन कर धन्यता का अनुभव किया।

राष्ट्रसंत पूज्यश्री का ६६वें दीक्षा वर्ष में मंगल प्रवेश

दि. 04/12/20, का. व. ३ के दिन राष्ट्रसंत पूज्य गुरुदेव श्रीमद् पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा ने दीक्षा पर्याय के संयममय ६५ वर्ष पूर्ण कर ६६वें वर्ष में प्रवेश किया। इस प्रसंग पर भाविक भक्तों ने पूज्यश्री को शुभेच्छा प्रदान की एवं गुरुभगवंत ने सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया । श्रीमान् जयकुमार किरणजी बेगानी परिवार परम ज्वेलर्स (बिकानेरवालों) द्वारा इस पावन प्रसंग के उपलक्ष्य में उपस्थित समस्त श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा परिवार के कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया । गुरुदेव की संयमयात्रा दीर्घ समय तक निर्विघ्नरूप से चलती रहे, हम सब पर आशीर्वाद बरसाते रहे ऐसी शुभकामना।

सरलस्वभावी पूज्य मुनिराज श्री शांतिसागरजी म.सा. को भावसभर श्रद्धांजली

तपागच्छाधिपति आचार्यदेव श्री मनोहरकीर्तिसागरसूरीश्वरजी महाराजा के शिष्यरत्न पू. मुनि श्री शांतिसागरजी म.सा. सोमवार दि. 07/12/20, कार्तिक वदि ७ को वीजापुर में कालधर्म प्राप्त हुए। आपका जन्म उदयपुर (मेवाड) में हुआ, उम्र ८८ वर्ष, दीक्षा पर्याय-५५ वर्ष, अंतिम आराधना भूमि- श्रीमद् बुद्धिसागरसूरि समाधि मंदिर, विजापुर गुजरात । जीवन की अंतिम क्षण तक विजापुरतीर्थ में स्थित ज्ञानभंडार के सूचिकरण आदि कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया । पूज्य मुनिराजश्री के कालधर्म का समाचार मिलने पर श्रीमहावीर जैन आराधना केन्द्र स्थित राष्ट्रसंत परम पूज्य आचार्य भगवंत श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा आदि सूरि पदस्थ श्रमण भगवंतोंने देववंदन एवं उनके गुणानुवाद किये। प्रौढ़संयमी, सरलस्वभावी, जीवन के अंत तक ज्ञान के उपासक पूज्य मुनिराजश्री को भावसभर श्रद्धांजली।

For Private and Personal Use Only

नूतनवर्ष के पावन प्रसंग पर कोबातीर्थ मध्ये श्री गौतमस्वामी पूजन का मंगल दृश्य

ज्ञानपंचमी के दिन ज्ञानमंदिर कोबा में आयोजित माँ सरस्वती के अनुष्ठान का मनोरम दृश्य

For Private and Personal Use Only

Registered Under RNI Registration No. GUJMUL/2014/66126 SHRUTSAGAR (MONTHLY).
Published on 15th of every month and Permitted to Post at Gift City SO, and on 20th date of every month under Postal Regd. No. G-GNR-334 issued by SSP GNR valid up to 31/12/2021.

दीपावलीपर्व प्रसंग पर ज्ञानमंदिर मध्ये आयोजित चोपडापूजन व लक्ष्मीपूजन की झलकियाँ

श्रीमान् आत्मानंदजी के जन्मदिन पर श्रीमद् राजचंद्र आश्रम में राष्ट्रसंत पूज्यश्री का पावन पदार्पण

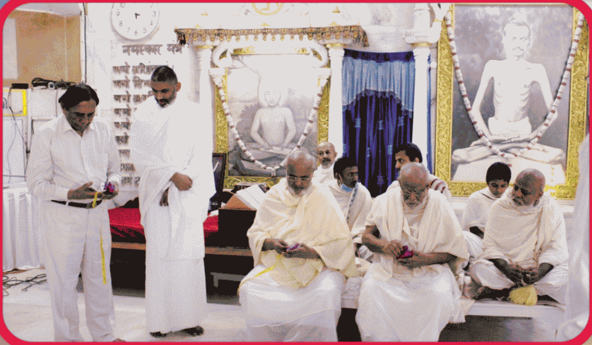

BOOK-POST / PRINTED MATTER

प्रकाशक
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा
जि. गांधीनगर ३८२४२६
फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२
फेक्स (०७९) २३२७६२४९
Website : www.kobatirth.org
email : gyanmandir@kobatirth.org

Printed and Published by : HIREN KISHORBHAI DOSHI, on behalf of SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.&Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat.
And Printed at : NAVPRABHAT PRINTING PRESS, 9, Punaji Industrial Estate, Dhobighat, Dudheshwar, Ahmedabad-380004 and
Published at : SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.& Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat. Editor : HIREN KISHORBHAI DOSHI

For Private and Personal Use Only